Toppersnotes®
Unleash the topper in you

HPSC

हरियाणा लोक सेवा आयोग

Haryana Public Service Commission

सामान्य अध्ययन

पेपर – 3 भाग – 2 (अ)

भारत और विश्व, अंतर्राष्ट्रीय मामले और संस्थाएँ

SIERRA INNOVATIONS

Haryana Public Service Commission

पेपर - 3 भाग - 2 (अ और स)

भारत और विश्व, अंतर्राष्ट्रीय मामले और संस्थाएँ

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**विदेश नीति की प्रमुख बातें** • उद्देश्य • विदेश नीति के निर्धारक • अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रमुख शब्दावली • आर्थिक एकीकरण में प्रयुक्त शब्दावली	1
2.	**भारत की विदेश नीति का विकास** • प्राचीन विदेश नीति • मध्यकालीन विदेश नीति • ब्रिटिश काल की विदेश नीति • डॉ. एस. जयशंकर द्वारा स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति के चरण • गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) • बांडुंग सम्मेलन	5
3.	**भारत और उसके पड़ोसी देश** • नेबरहुड फर्स्ट नीति • भारत-अफगानिस्तान संबंध • भारत-श्रीलंका संबंध • भारत-मालदीव संबंध • भारत-म्यांमार संबंध • भारत-नेपाल संबंध • भारत-बांग्लादेश संबंध • भारत-चीन संबंध • भारत-पाकिस्तान संबंध • भारत-भूटान संबंध	12
4.	**भारत-अमेरिका संबंध**	48
5.	**भारत-कनाडा संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • आगे की राह	53
6.	**भारत-रूस संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • आगे की राह	55
7.	**भारत और पश्चिम एशिया** • ऐतिहासिक संबंध • भारत के लिए पश्चिम एशिया का महत्व • चिंताएं/चुनौतियां • नव गतिविधि	60

	• भारत-ईरान संबंध • भारत-इजरायल संबंध • भारत-UAE संबंध • भारत-तुर्की संबंध • भारत-कतर संबंध • भारत-सऊदी अरब संबंध	
8.	**भारत और मध्य एशियाई देश** • भारत - मध्य एशियाई देश संबंध • मध्य एशिया संयोजकता नीति • भारत-मध्य एशिया द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के तरीके: • भारत-कजाखस्तान • भारत-किर्गिस्तान • भारत-ताजिकिस्तान • भारत-तुर्कमेनिस्तान • भारत-उजबेकिस्तान संबंध	**73**
9.	**भारत और दक्षिण पूर्व एशिया** • ऐतिहासिक संबंध • स्वतंत्रता के बाद संबंधों की समयरेखा • पूर्व की ओर देखो नीति (एलईपी) • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियां • भारत-वियतनाम संबंध • भारत-सिंगापुर संबंध • भारत-मलेशिया संबंध • भारत-इंडोनेशिया संबंध • भारत-थाईलैंड संबंध	**83**
10.	**पूर्वी एशिया और प्रशांत** • भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध • भारत-न्यूजीलैंड संबंध • भारत-जापान संबंध • भारत-दक्षिण कोरिया संबंध • भारत और इंडो-पैसिफिक	**92**
11.	**हिंद महासागर** • हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) • भारत-मॉरीशस संबंध	**103**
12.	**भारत-अफ्रीका संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • भारत के लिए अफ्रीका का महत्व • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियों • आगे की राह	**107**
13.	**भारत-यूरोप संबंध** • यूरोपीय संघ • भारत-जर्मनी संबंध • भारत-फ्रांस संबंध • भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध	**112**

14.	**लैटिन अमेरिका और कैरिबियन (LAC) के साथ भारत के संबंध** • ऐतिहासिक संबंध • सहयोग के क्षेत्र • चुनौतियाँ • भारत-ब्राजील संबंध • MERCOSUR (मर्कोसुर) • कैरीकॉम (CARICOM)	**123**
15.	**प्रवासी भारतीय** • भारत की प्रवासी नीति • प्रवासी भारतीयों के लिए महत्वपूर्ण पहल • प्रवासी भारतीयों का महत्व • भारतीय प्रवासियों के सामने चुनौतियां	**129**

16.	**महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान**
	• संयुक्त राष्ट्र संगठन (UNO)
	• संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसियां
	• अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
	• विश्व बैंक
	• विश्व आर्थिक मंच (WEF)
	• राष्ट्रमंडल
	• विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
	• विश्व व्यापार संगठन (WTO)
	• अन्य महत्वपूर्ण संयुक्त राष्ट्र संस्थान
	    ○ संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO)
	    ○ संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद
	    ○ संयुक्त राष्ट्र शस्त्र व्यापार संधि (ATT)
	    ○ शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर)
	    ○ संयुक्त राष्ट्र शांति सेना
	• अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC)
	• स्थायी मध्यस्थता न्यायालय (PCA)
	• विविध संस्थान
		132

17.	**वैश्विक समूह**
	• G-7
	• G-20
	• G-77
	    ○ भारत की भूमिका:
	• खाड़ी सहयोग परिषद
	    ○ GCC के साथ भारत के संबंध
	• पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन (OPEC)
	• रायसीना संवाद (RD)
	• बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था (MECR)
	    ○ परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG)
	    ○ अप्रसार संधि या NPT
	    ○ ऑस्ट्रेलिया समूह (AG)
	    ○ मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (MTCR)
	    ○ वासेनार व्यवस्था
		144

	○ रासायनिक हथियार सम्मेलन (CWC), 1997 • एशिया - प्रशांत महासागरीय आर्थिक सहयोग • BRICS • भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (IBSA) संवाद मंच • शंघाई सहयोग संगठन (SCO) • अश्गाबात समझौता • दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) • बांग्लादेश भूटान भारत नेपाल (BBIN) पहल • बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) • दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) • एशियाई विकास बैंक • अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन • क्वाड ग्रुपिंग • आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) • ऑर्गेनिक ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (OIC) • क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP)	
18.	**महत्वपूर्ण मुद्दे** • दक्षिण चीन सागर संघर्ष • आर्मेनिया-अज़रबैजान संघर्ष • अरब स्प्रिंग और सीरियाई संकट • अरब स्प्रिंग	**163**
19.	**कूटनीति के बदलते क्षेत्र** • सॉफ्ट पावर(नम्र शक्ति) डिप्लोमेसी • नम्र शक्ति • भारत की जलवायु परिवर्तन कूटनीति • अंतरिक्ष कूटनीति	**165**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

»

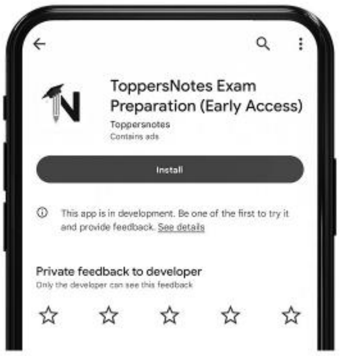

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।

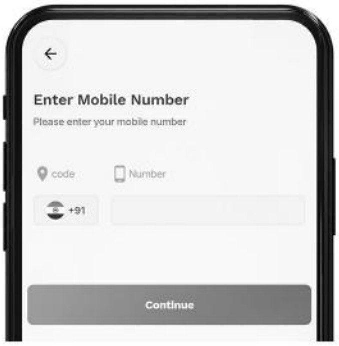

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें।

»

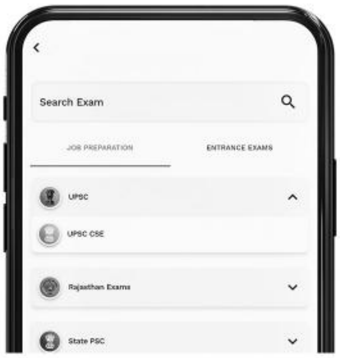

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें।

»

सर्च बटन पर क्लिक करें।

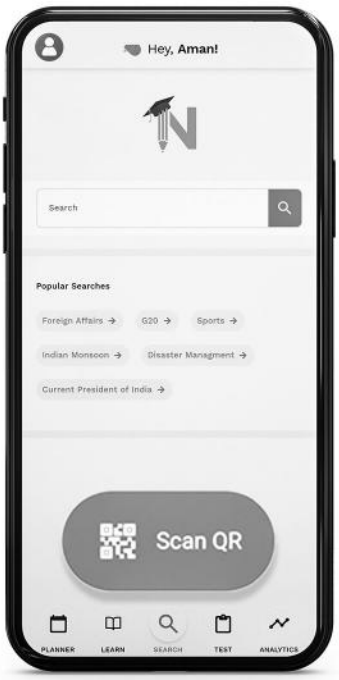

SCAN QR पर क्लिक करें।

»

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें।

1 CHAPTER

विदेश नीति के मूलभूत तत्व

- **विदेश नीति:** अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रीय हित के अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए एक राष्ट्र द्वारा अपनाए गए और पालन किए जाने वाले सिद्धांतों, निर्णयों और साधनों का समूह है।
- विदेश नीति राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों को परिभाषित करती है और फिर राष्ट्रीय शक्ति के प्रयोग के माध्यम से इन्हें सुरक्षित करने का प्रयास करती है।

उद्देश्य

- अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना।
- समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल बाह्य वातावरण तैयार करना।
- यह सुनिश्चित करना कि वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज सुनी जाए और भारत विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर वैश्विक राय को प्रभावित करने में सक्षम हो ।
- भारतीय प्रवासियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना, साथ ही साथ उनके हितों की यथासंभव रक्षा करना।

विदेश नीति के निर्धारक

- **राज्य क्षेत्र का आकार:** व्यापक मानव और गैर-मानव संसाधन वाले राष्ट्रों में बड़ी शक्ति बनने की संभावना बेहतर होती है। जापान, मध्य पूर्व के देशों, इज़राइल आदि अपवाद है।
- **भूगोल:** भूमि की स्थलाकृति, उसकी उर्वरता, जलवायु और स्थान।
- **सामरिक संस्कृति:** ऐतिहासिक, दार्शनिक और पारंपरिक पहलु, मूल्य और नैतिकता जैसे भाईचारा, अहिंसा आदि।
- **सामाजिक संरचना:** सामाजिक समूहों की प्रकृति और संघर्ष और सद्भाव का स्तर जो उनके पारस्परिक संबंधों को निर्धारित करता है।
- **सरकारी संरचना:** सरकार की संरचना यानी संगठनात्मक एजेंसियाँ जो विदेश नीति निर्माण और कार्यान्वयन को संभालती हैं।
- **आंतरिक स्थिति:** किसी राष्ट्र के आंतरिक वातावरण में होने वाले आकस्मिक परिवर्तन, अशांति या विकार भी विदेश नीति की प्रकृति और विकास को प्रभावित करते हैं।
- **आवश्यकताएँ और लक्ष्य:** सुरक्षा और क्षेत्रीय अखंडता के साथ-साथ देश के आर्थिक लक्ष्य, और एक शांतिपूर्ण बाहरी वातावरण।
- **आर्थिक विकास का स्तर और प्रकृति औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण** विदेश नीति के महत्वपूर्ण कारक हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संरचना (वैश्विक सामरिक पर्यावरण):** प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति उस शक्ति संरचना की प्रकृति से प्रभावित होती है जो अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में एक विशेष समय पर प्रचलित होती है।
- **कूटनीति**: यह अन्य राष्ट्रों के साथ संबंधों के दौरान विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करती है और यह विदेश नीति का एक निर्धारक भी है।
- वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियाँ: वैश्विक शक्ति समीकरणों का बदलना, आतंकवाद, कट्टरवाद, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता।
- **प्रौद्योगिकी:** तकनीकी विकास का स्तर और प्रकृति विदेश नीति के महत्वपूर्ण तत्व हैं।
- गठबंधन और अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ (द्विपक्षीय और बहुपक्षीय): अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ, समझौते, व्यापारिक खंड और गठबंधन विदेश नीति के प्रमुख निर्धारक हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रमुख शब्दावलियाँ

- **अभिकर्ता** - एक निकाय जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक हितधारक है।
- **सहायता-** रियायती आधार पर 2 विदेशी पार्टियों के बीच उत्पादों और सेवाओं का आदान-प्रदान; सशर्त या बिना शर्त हो सकता है।
- **गठबंधन-** युद्ध के समय दो अभिकर्ताओं के बीच हस्ताक्षर किए गए रक्षा समझौते, जो तभी कार्यरत होती है।
- **युद्धविराम-** शत्रु देशों द्वारा शत्रुता को रोकने और शांतिपूर्ण समाधान की तलाश करने का द्विपक्षीय प्रयास। उदाहरण: 1949 से 1978 तक अरब और इज़राइल के बीच युद्धविराम।
- **शरण -** एक सुरक्षित आश्रय को संदर्भित करता है।
- अर्द्ध-कानूनी प्रक्रिया जिसमें एक राज्य दूसरे राज्य के नागरिक को क्षेत्रीय सीमा के अन्दर सुरक्षा प्रदान करता है।
- **तुष्टीकरण-** संघर्ष से बचने के लिए आक्रामक राज्य की सभी माँगो को पूरा करने की नीति।
- **निरोध-** परिणामों का भय पैदा करके किसी देश को हतोत्साहित करने की कार्रवाई।
- **निरस्त्रीकरण-** विशिष्ट सशस्त्र प्रणालियों को कम करने, हटाने और समाप्त करने की राज्य की प्रक्रिया। यह आमतौर पर परमाणु हथियारों के संबंध में प्रयोग किया जाता है।

- **प्रत्यर्पण**- ऐसी स्थिति जिसमें एक राज्य एक पलायक को दूसरे में स्थानांतरित करता है।
- मुक्त व्यापार- द्विपक्षीय व्यापार प्रणाली जो बिना किसी बाधा के व्यापार की अनुमति देती है।
- **भू-राजनीति-** विदेश नीति विश्लेषण की एक विधि = भौगोलिक विशेषताओं के उपयोग के माध्यम से किसी राज्य के राजनीतिक आचरण की व्याख्या करना।
- **महान शक्तियाँ-** आर्थिक और सैन्य क्षमताओं के आधार पर वैश्विक राज्यों की रैंकिंग।
- **आधिपत्य-** दूसरों पर राज्य का राजनीतिक, आर्थिक या सैन्य वर्चस्व।
- **हॉट-परस्यू-** भूमि-आधारित गतिविधियाँ जहाँ एक राज्य राष्ट्रीय हित में अपनी क्षेत्रीय सीमा के बाहर किसी अपराधी का पीछा करने का अधिकार सुरक्षित रख सकता है।
- **बहुध्रुवीयता-** कई शक्तिशाली अभिकर्ताओं के साथ एक वैश्विक प्रणाली। उदाहरण: अमेरिका, चीन, रूस और भारत।
- **पैरा-कूटनीति**- पड़ोसी देशों के साथ राजनयिक संबंध बढ़ाने में राज्य सरकार की भूमिका।
- **प्रभावमंडल**- ऐसी स्थिति जिसमें एक बाहरी राज्य का दूसरे क्षेत्र पर आर्थिक या सैन्य आधिपत्य हो।
- **टैरिफ**- धन संग्रहण के लिए आयात कर; संरक्षणवाद के एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- **संधि और कन्वेंशन**-
  - **संधि** = अभिकर्ताओं द्वारा हस्ताक्षरित लिखित समझौता, अनुबंध में सहमति से सहमत विशिष्ट नियमों को स्वीकार करने के लिए हस्ताक्षर करने वाले दलों की आवश्यकता होती है।
  - **कन्वेंशन** = विशेष संधि जो सदस्य राज्यों द्वारा अनुसमर्थित होने के लिए एक समझौते का निर्माण करके एक वैश्विक मुद्दे की चर्चा का समापन करती है।

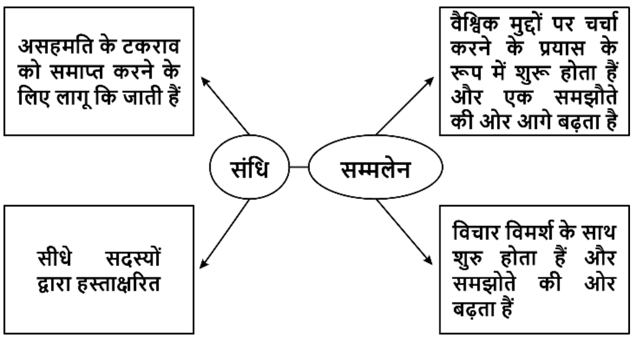

- **प्रोटोकॉल**- एक संधि जो संधि के मुख्य भाग में परिवर्तन की अनुमति देती है।

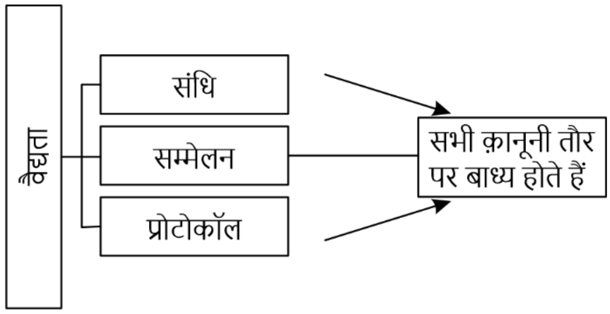

संधियों के हस्ताक्षर और अनुसमर्थन- जब कोई राज्य एक संधि पर हस्ताक्षर करता है, तो वह संधि में अपनी रुचि दर्शाता है। जब कोई राज्य किसी संधि की पुष्टि करता है तो उससे बाध्य होने की इच्छा व्यक्त करता है और उसकी **राष्ट्रीय संसद द्वारा अधिकृत संधि।**

हस्ताक्षर	कर्तव्य	अनुसमर्थन
इंगित करता है कि राज्य बाध्य होने के लिए कदम उठाएगा	राज्यों को जवाबी कार्रवाई से बचना चाहिए।	संधियों के प्रावधानों को लागू करने के लिए कानूनी रूप से एक राज्य की बोली लगाता है

- **वीटो**- अवांछित घटना को एकतरफा रोकने की क्षमता।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की अतिरिक्त शब्दावलीयाँ / अवधाराएँ

- **प्राकृतिक सहयोगी और सामरिक भागीदार:**
  - **प्राकृतिक सहयोगी:** वे देश जो समान सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक आदर्श साझा करते हैं, जैसा कि अमेरिका और यूके ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान किया था।
  - **सामरिक भागीदार:** वे देश जो समान मूल्यों को साझा नहीं करते हैं लेकिन क्षेत्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सहयोग करते हैं।

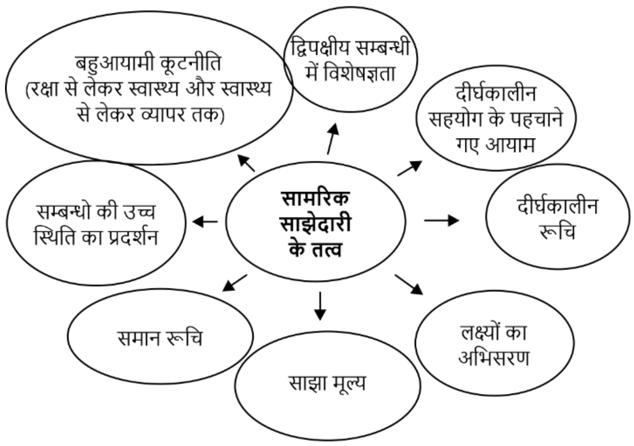

- **निवल सुरक्षा प्रदाता:** एक ऐसे देश का वर्णन करें, जो एक स्थिर, शांतिपूर्ण और सुरक्षित पड़ोस सुनिश्चित करने में सक्षम हो।
- **राष्ट्रीय हित:** एक अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में किसी देश की विदेश नीति के उद्देश्यों को निर्धारित करने के लिए विश्लेषणात्मक उपकरण।
- **गैर-पारंपरिक सुरक्षा जनित खतरे:** प्रवासन, गरीबी, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और सुरक्षा की जिम्मेदारी गैर-पारंपरिक सुरक्षा मुद्दों के कुछ उदाहरण हैं।
- **प्रत्यक्ष और गुप्त संचालन:**
- **प्रत्यक्ष संचालन:** जब कोई देश प्रत्यक्षत: कुछ करता है। वर्ष 1998 में, भारत ने परमाणु परीक्षण किए और खुद को परमाणु हथियार वाला राज्य घोषित किया।
- **गुप्त संचालन:** गुप्त रूप से किया गया। उदाहरण: रॉ, पाकिस्तान को नियंत्रण में रखने के लिए गुप्त अभियानों का उपयोग करता है।
- **कूटनीतिक दौर :** अंतर्राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था द्वारा उपयोग किए जाने वाले वार्ता मंच ।
  - **पहला दौर :** आधिकारिक कूटनीति, राज्यों के प्रमुख, राजनयिक आदि मुद्दों को हल करने के लिए बातचीत करते हैं।
  - **दूसरा दौर :** गैर-सरकारी अभिकर्ता जैसे गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाजों, व्यापारिक घरानों, मीडियाकर्मियों और यहां तक कि संघर्ष समाधान विशेषज्ञों का उपयोग मुद्दों को हल करने के लिए बातचीत करता है।
  - **बहुदौर :** डॉ. लुई डायमंड ने कूटनीति के 9 अलग-अलग ट्रैक की पहचान की।

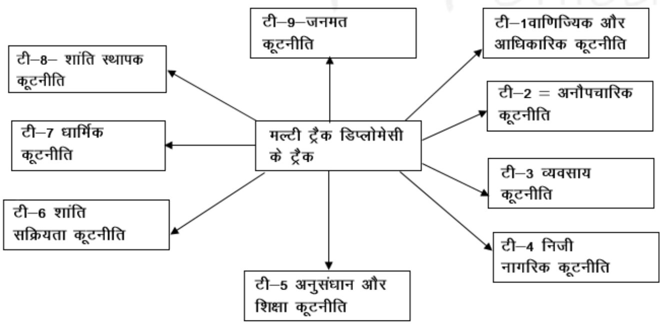

- **बैकचैनल डिप्लोमेसी:** जब दो दुश्मन एक राजनयिक सफलता बनाने के लिए गुप्त चैनलों के माध्यम से संवाद करते हैं। बराक ओबामा और हसन रूहानी ने बैकचैनल राजनयिक वार्ता शुरू की, जिसके परिणामस्वरूप 2015 में अमेरिका और ईरान के बीच परमाणु समझौता हुआ।
- **पिंग-पोंग कूटनीति:** राजनयिक मंच दो देशों के बीच संचार के लिए खुले हैं। उदाहरण: यूएस-चीन ने 1970 के दशक की शुरुआत में संचार लाइनें स्थापित करने के लिए टेबल टेनिस खिलाड़ियों का आदान-प्रदान शुरू किया, जिसके कारण निक्सन की चीन यात्रा हुई।
- **सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी:** एक प्रकार की कूटनीति जिसका उपयोग राज्य द्वारा सैन्य बल का सहारा लिए बिना या प्रलोभन के रूप में वित्तीय प्रोत्साहन की पेशकश के बिना अपने घोषित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

आर्थिक एकीकरण में प्रयुक्त शब्दावली

- राज्य पहले चरण में एक **व्यापार निवेश रूपरेखा समझौते (TIFA)** के लिए सहमत हो सकते हैं।
  - जब दो देश व्यापार का विस्तार करना चाहते हैं और द्विपक्षीय समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। 2009 में ASEAN-अमेरिका के बीच हस्ताक्षर किए।
- **द्विपक्षीय निवेश संधि, (BIT)** पर पहले चरण में समान स्तर पर विचार किया जा सकता है।
  - FDI को प्रोत्साहित करना और एक दूसरे के क्षेत्र में निवेशकों के निवेश की रक्षा करना। 1940 के दशक में, जर्मनी-पाकिस्तान ने दुनिया के पहले BIT पर हस्ताक्षर किए।
- **अधिमानी व्यापार समझौता (PTA):** एकीकरण प्रक्रिया में दूसरा चरण

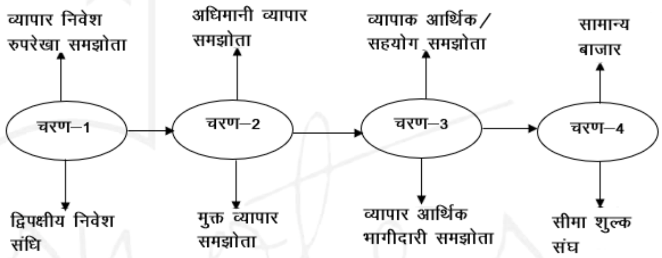

- PTA – Preferential Trade Agreement
- सदस्य राज्य **गैर-टैरिफ बाधाओं को क्रम करके टैरिफ बाधाओं को न्यून करते है।**
- FTA के लिए एक कदम के रूप में काम करते हैं।
- **मुक्त व्यापार समझौता (FTA - Free Trade Agreement)**
  - उत्पादों और सेवाओं पर शुल्क समाप्त।
  - व्यापार बाधाओं को कम करने से व्यवसायों को विशेषज्ञता और श्रम विभाजन को बढ़ाकर प्रतिस्पर्धा में बढ़त हासिल करने में मदद मिलती है।
  - FTA से परे, देश **व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (CECA) या व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA)** पर हस्ताक्षर करते हैं।
  - **CECA**: व्यापार को बढ़ावा देने के लिए शुल्कों का उदारीकरण करके एक निवेश प्रणाली का निर्माण करना।
- **CEPA**: निवेश, बौद्धिक संपदा, और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा पर समझौता और माल और सेवाओं के व्यापार का उदारीकरण।

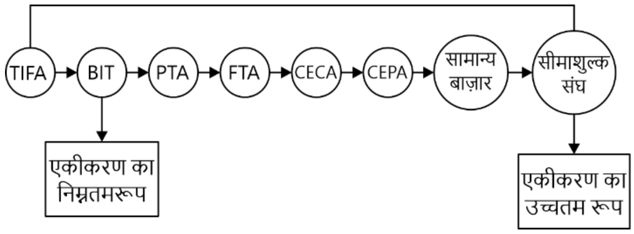

<u>सामान्य बाजार:</u> भाग लेने वाले राज्यों के बीच सभी तकनीकी, भौतिक और वित्तीय बाधाओं को दूर करना।

- पूंजी और श्रम एक देश से दूसरे देश में स्वतंत्र रूप से स्थानांतरित हो सकते हैं।
- भाग लेने वाले राज्यों के बीच सभी तकनीकी, भौतिक और वित्तीय बाधाओं को दूर करना।
- सीमा शुल्क संघ: आर्थिक एकीकरण का अधिकतम स्तर।
- जब राज्य सामूहिक रूप से समूह के भीतर पूर्ण मुक्त व्यापार की अनुमति देते हुए सभी आयातों पर एक समान आयात शुल्क लगाने का निर्णय लेते हैं।

2 CHAPTER

भारत की विदेश नीति का विकास

प्राचीन विदेश नीति

- **स्रोत:** प्राचीन भारतीय शास्त्रों से कई कूटनीतिक उदाहरण।
- **मनु-स्मृति** - एक राज्य में अधिकारियों की विभिन्न भूमिकाओं पर टिप्पणी करना।
- **चाणक्य का अर्थशास्त्र** - कूटनीतिक अभ्यास पर दुनिया का पहला व्यापक ग्रंथ, भारतीय कूटनीति का वर्णन करता है।
- **दूत**: मेगस्थनीज, डीमाचोस, डायोनिसियस आदि।
- **सिंधु घाटी सभ्यता:** समुद्र के रास्ते ओमान, दिलमुन, मगन और मेलुहा, मेसोपोटामिया के साथ व्यापार फला-फूला।
- **साक्ष्य**: कार्नेलियन, लैपिस लाजुली, तांबा, सोना, जार, सील आदि।
- **जैन धर्म और बौद्ध धर्म**
  - **उत्पत्ति**: भारत
  - **समृद्ध हुआ** : चीन, श्रीलंका, तिब्बत आदि में।

रामायण और भारतीय विदेश नीति

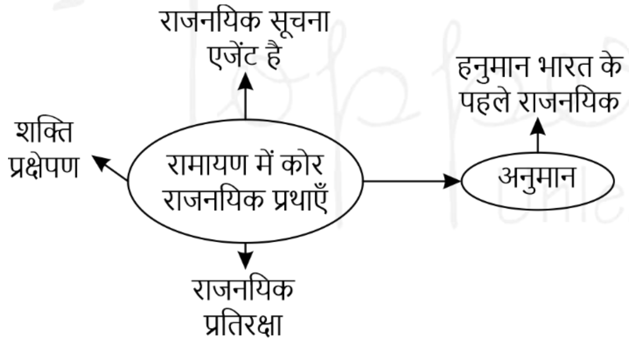

- **रामायण से अपनाए गए सिद्धांत:**
  - राजनयिक के रूप में हनुमान : सीता और राम के बीच संवेदनशील जानकारी को विकृत किए बिना स्थानांतरित किया।
  - हनुमान ने शक्ति प्रक्षेपक के रूप में काम किया: रावण के दरबार में राम की शक्ति का आभास कराया ।
  - राजनयिक बचाव: विभीषण ने हनुमान का बचाव इस आधार पर किया कि वह एक विदेशी राज्य से एक दूत के रूप में लंका आए थे और उन्हें मौत की सजा नहीं दी जा सकती।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र और भारतीय विदेश नीति

- राज्य के शिल्प और विदेश नीति और कूटनीति के संचालन से संबंधित।

मंडल सिद्धांत अर्थात् राजमंडल या राज्यों का वृत्त

- विजिगीषु: विश्व विजेता।
- अरी: एक प्राकृतिक शत्रु जिसका क्षेत्र विजिगीषु के लिए संक्रामक है।
- मित्र: विजिगीषु का एक सहयोगी, जिसका क्षेत्र शत्रु या अरि से ठीक विपरीत है।
- अरिमित्र: शत्रु का सहयोगी, जो सहयोगी से तत्काल परे है।
- मित्र-मित्र: शत्रु के सहयोगी से तुरंत परे एक सहयोगी।
- अरिमित्र-मित्र: मित्र-मित्र के ठीक आगे स्थित शत्रु के सहयोगी का सहयोगी।
- पार्श्वनिग्रह: शत्रु, विजिगीषु का पिछला भाग। जो हमला नहीं करता है; बल्कि पीछे से परेशान करने की कोशिश करता है।
- उक्रंद: पार्श्वनिग्रह के पीछे विजिगीषु का सहयोगी।
- पार्श्वनिग्रहसार: शत्रु का सहयोगी, उक्रंद के पीछे पार्श्वनिग्रह का सहयोगी।
- अक्रंदसार: पार्श्वनिग्रहसार के पीछे उक्रंद का सहयोगी, अंततः एक सहयोगी।
- मध्यमा: विजिगीषु और अरी से सटे क्षेत्र के साथ मध्य राजा और दोनों से अधिक मजबूत।
- उदासीन: विजिगीषु, अरी और मध्यमा से तटस्थ और अधिक शक्तिशाली।

षडगुण सिद्धांत अर्थात् विदेश नीति के छह उपाय

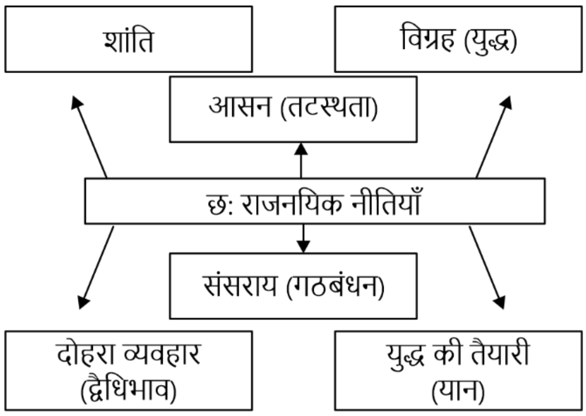

- **संधि** (जब कोई अपने शत्रु से अपेक्षाकृत कमजोर हो तब संधि करना)।
- **विग्रह** (शत्रु से बलवान होने पर शत्रुता अपनाना)।
- **आसन** (चुप रहना और शत्रु के कमजोर होने/आपदा/युद्ध में होने की प्रतीक्षा करना)।

- **यान** (एक अभियान का संचालन करना, जब कोई अपने दुश्मन से निश्चित रूप से मजबूत हो)।
- **संश्रय**: (किसी शक्तिशाली शत्रु के आक्रमण के समय दूसरे राजा की शरण में जाना)।
- **द्वैधिभाव**: (एक समय में एक राजा के साथ संधि और दूसरे के साथ विग्रह की नीति)।

राज्य का सप्तांग सिद्धांत राज्य के कुशल शासन के लिए

शाखा	अर्थ	वर्तमान में अर्थ
स्वामी	राजा	राष्ट्रपति
अमात्य	मंत्री	प्रधानमंत्री+ कैबिनेट
जनपद	क्षेत्र और जनसंख्या	प्रादेशिक सीमाएँ
दुर्ग	किला	राष्ट्रपति भवन
कोष	ख़ज़ाना	वित्त मंत्रालय
बल	सेना	रक्षा बल
मित्र	मित्र	रूस, आदि जैसे देश।

मध्यकालीन विदेश नीति

- पश्चिमी तट पर भारत के दक्षिण के राज्यों ने अफ्रीका में अरब सागर के किनारे और हिंद महासागर के तटवर्ती राज्यों के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- पूर्वी-तट और दक्षिण के राज्यों ने सीलोन, बर्मा, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलाया के साथ संबंध बनाए रखा।
- भारत में स्थित अफगान और तुर्की शासकों ने मध्य एशिया, फारस, अरब के देश, एशिया माइनर, ग्रीस, लेवेंट, तिब्बत और चीन के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- मुगलों ने पड़ोसियों और पुर्तगाली, फ्रेंच, ब्रिटिश आदि के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- अकबर के समय में, भारत: सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, आर्थिक कूटनीति का भागीदार था।
- भारतीय क्षेत्र बढ़ाने के लिए अपनाई गई विषय वस्तु- कठिन कूटनीति: लड़ाईयों के माध्यम से समेकित और नया क्षेत्र हासिल किया।
- उत्तरी भारत- मुगलों, अरबों, तुर्कों आदि ने भारत में धन प्राप्त करने और भारत में नए राज्यों को मजबूत करने के लिए भारत पर आक्रमण किया।
- दक्षिणी भारत- चोल, चेर, पाण्डेय आदि ने अपनी कूटनीतिक उन्नति के लिए मजबूत सेना और नौसेना का उपयोग किया।
- सॉफ्ट डिप्लोमेसी: संबंधों को मजबूत करने के लिए राजाओं द्वारा भेजे गए राजदूत और व्यापार

ब्रिटिश काल की विदेश नीति

- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति ने नए समुद्री और व्यापारिक मार्गों की खोज की।
- कैप्टन हॉकिन्स और सर थॉमस रो को भारत में व्यापार के लिए सम्राट जहांगीर के दरबार में भेजा गया।
- भारत की खोज वर्ष 1498 में वास्को डी गामा नामक पुर्तगाली ने की थी।
- अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगाली और डच व्यापार के लिए भारत आए।
- भारत में दुर्गीकृत कारखानें स्थापित करके भारत को अपना उपनिवेश बना लिया।
- भारत से ब्रिटेन को कच्चे माल का निर्यात और तैयार माल का आयात (ब्रिटेन से भारत)।
- ईस्ट इंडियन एसोसिएशन, वैंकूवर में स्वदेश सेवक घर, सिएटल में यूनाइटेड इंडिया हाउस ने ब्रिटिश भारत के खिलाफ कूटनीति को मजबूत करने के लिए भारतीय राष्ट्रवादी मार्ग अपनाया।
- राजा महेंद्र प्रताप सिंह द्वारा काबुल में भारत की एक अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।
- 1927 ई. के बाद, कांग्रेस द्वारा जारी पहली विदेश नीति का प्रारूप तैयार करने में नेहरू की सक्रिय भूमिका निभाई ।
- ब्रिटिश आक्रमण ने अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सम्पर्क प्रारम्भ कराया ।
- सुभाष चन्द्र बोस की कूटनीतिक नीति ने जापान को अंग्रेजों के खिलाफ भारत की मदद करने के लिए मजबूर किया।
- भारत ने 1944 ई. में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में भाग लिया।
- अंतरिम सरकार ने संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, सोवियत संघ आदि के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए रखा।

डॉ. एस. जयशंकर के अनुसार स्वतंत्रता के बाद से भारत की विदेश नीति के चरण

1. आशावादी गुटनिरपेक्षता का युग (1946-1962)

- कूटनीति → सतत विकास के लिए सहकारी संबंधों का उपकरण।
- पंचवर्षीय योजना की स्वीकृत नीति।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था के साथ-साथ समाज के समाजवादी स्वरूप पर बल दिया।
- गरीबी को खत्म करने और सभी के लिए काम सुनिश्चित करने के लिए संसदीय सरकार के ढाँचे के भीतर आवश्यक सेवाओं और बुनियादी उद्योगों के समाजीकरण का प्रचार करना।
- भारत ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का सदस्य बन गया।
- भारत की विदेश नीति पंचशील सिद्धांतों पर आधारित थी।
- भारत ने साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई में नव स्वतंत्र देशों का समर्थन किया।
- NAM, पंचशील और बांडुंग सम्मेलन जैसी पहलों द्वारा तीसरी दुनिया के देशों को नेतृत्व प्रदान किया।
- भारत - गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने वाला पहला देश है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM)

- **स्थापित**– 1961, बेलग्रेड में जब शीत युद्ध चरम पर था।
- **नेतृत्व**: यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो, मिस्र के जमाल अब्देल नासिर, भारत के जे. एल. नेहरू, घाना के क्वामे नकरुमाह और इंडोनेशिया के सुकर्णो।
- **पहला सम्मेलन:** बेलग्रेड, यूगोस्लाविया, सितंबर 1961 में।
- यह विश्व शांति बनाए रखने के लिए और उपनिवेशवाद से मुक्ति की प्रक्रिया में प्रमुख तत्व था।

उद्देश्य

- गुटनिरपेक्ष देशों की राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा।
- साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद, नस्लवाद और विदेशी अधीनता के सभी रूपों के खिलाफ संघर्ष।

भारत के लिए NAM

- भारत की आर्थिक प्रगति पूर्व और पश्चिम दोनों से जुड़ी हुई थी।
- शीत युद्ध के युग के द्विध्रुवीय विभाजन का समाधान।
- शीत युद्ध में किसी भी महाशक्ति के साथ भागीदारी करके स्वतंत्रता को खतरे में डाले बिना भारत की सामरिक स्वायत्तता की रक्षा करना।

बांडुंग सम्मेलन

- पहला बड़े पैमाने का एफ्रो-एशियाई सम्मेलन (सबसे नया स्वतंत्र)।
- 18-24 अप्रैल 1955 को बांडुंग, पश्चिम जावा, इंडोनेशिया में हुआ।

सिद्धांत

1. मौलिक मानवाधिकारों का सम्मान।
2. सभी राष्ट्रों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान।
3. सभी जातियों के बीच समानता और सभी राष्ट्रों के बीच समानता की मान्यता।
4. किसी दूसरे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप या गैर-हस्तक्षेप।
5. संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप अपनी रक्षा करने के प्रत्येक राष्ट्र के अधिकार का सम्मान करें।
6. किसी भी महान शक्ति के हितों के लाभ के लिए सामूहिक रक्षा संधियों का उपयोग न करना और किसी भी देश द्वारा अन्य देशों के खिलाफ दबाव का उपयोग न करना।
7. किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ आक्रमण करने, या बल प्रयोग करने से बचना।
8. संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप सभी अंतरराष्ट्रीय संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान
9. आपसी हितों और सहयोग को बढ़ावा देना।
10. न्याय और अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों का सम्मान।

पंचशील

- औपचारिक रूप से व्यापार और समागम पर समझौता जोकि तिब्बत और भारत के मध्य में प्रतिपादित हुआ ।
- 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षरित। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रमुख केंद्र के रूप में अपनाया गया।

पंचशील सिद्धांत

- क्षेत्रीय अखंडता और एक दूसरे की संप्रभुता के लिए परस्पर सम्मान
- अनाक्रमण
- एक दूसरे के सैन्य मामलों में हस्तक्षेप न करना
- पारस्परिक लाभ और समानता
- शांतिपूर्ण सह - अस्तित्व
- बर्मा, चीन, लाओस, नेपाल, वियतनाम, यूगोस्लाविया और कंबोडिया इसके लिए सहमत हुए।

- भारत - संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य - 26 जून, 1945 को संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किए।
- विदेश नीति को मजबूत करने के लिए 1954 में चीन और 1955 में रूस का दौरा किया।
- तीव्र औद्योगीकरण → व्यापक गरीबी से मुक्ति पाने का सबसे प्रभावी तरीका।
- बाहरी आक्रमण: संयुक्त राष्ट्र में कूटनीति के साथ पाकिस्तान और चीन पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाया।
- भारत ने कूटनीतिक रूप से तिब्बत का समर्थन किया और दलाई लामा को शरण दी।

उस समय की विदेश नीति की आलोचना

- भारत-चीन युद्ध-1962 में हार ने UNSC के लिए चीन का समर्थन करने के लिए भारत के रुख की आलोचना की।
- अमेरिका-चीन-पाकिस्तान की धुरी ने भारत को रणनीतिक और राजनीतिक रूप से अलग-थलग कर दिया।
- सोवियत संघ - भारत का सहयोगी लेकिन भारत-चीन युद्ध, 1962 में "तटस्थ" रहा।
- कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाने की भी आलोचना हुई है।

- पाकिस्तान के साथ कुल मिलाकर संबंधो मे सुधार नहीं हुआ।
- NAM का अनुसरण करना कभी-कभी दोनों पक्षों के लिए प्रतिकूल होता है। उदाहरण के लिए, कोरियाई युद्ध के दौरान।

2. यथार्थवाद और प्रतिलाभ का दशक (1962-1971)

- गुटनिरपेक्षता की पूर्ववती नीति को जारी रखा।
- बर्मा के साथ फिर से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित हुए।

समझौते/पहल

- भारतीय मूल के व्यक्तियों पर श्रीलंका (भंडारानायके-शास्त्री संधि) के साथ।
- 10 जनवरी, 1966 को सोवियत शासन के तहत पाकिस्तान के साथ ताशकंद घोषणा पर हस्ताक्षर किए। पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंध बहाल करने के लिए।
- अर्थशास्त्र, शरणार्थियों और अन्य प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए दोनों पक्षों ने सभी सशस्त्र बलों को 5 अगस्त, 1965 से पूर्व तैनात पदों पर वापस लेने पर सहमति व्यक्त की।
- अपने युद्धबंदियों को वापस लाने के लिए भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (ITEC), और विशेष राष्ट्रमंडल अफ्रीकी सहायता कार्यक्रम 1964 में शुरू किया गया।
- इस अवधि के दौरान भारत की विदेश नीति को स्वरुप प्रदान करने वाली घटनाएँ

बाहरी स्थिति

- भारत-चीन युद्ध (1962)- भारी आर्थिक प्रभाव।
- 1962 में क्यूबा मिसाइल संकट।
- 1968 में परमाणु अप्रसार संधि (NPT) की स्थापना।

1965 की स्थितियों को महसूस करने में असमर्थता

- भारत-पाक युद्ध 1965 → ताशकंद ने क्षेत्रीय यथास्थिति को बहाल किया।
- सोवियत संघ और यूएस ने पाकिस्तान की मदद करने के अपने इरादे घोषित कर दिए।

देश में तात्कालिक प्रतिकूल परिस्थितियां.

- देश में सूखे और अकाल की स्थिति बनी रही।
- रुपये की रियायतों के बदले अमेरिका से अनाज के आयात पर निर्भरता और हरित क्रांति।
- सुरक्षित वित्तीय मदद, विश्व बैंक और आई.एम.एफ. ने 1966 में भारतीय रुपये को कमजोर करने के लिए मजबूर किया।

रावलपिंडी-बीजिंग-वाशिंगटन गठजोड़

- अमेरिका-चीन सहयोग बढ़ाना और पाकिस्तान को अमेरिकी समर्थन प्रदान करना ।
- अगस्त 1971 में भारत-सोवियत शांति, मित्रता और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए गए। सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए गए ।

3. क्षेत्रीय दावे का चरण (1971-1991)

1971 से 1984 तक भारत की विदेश नीति

- 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध और बांग्लादेश।
- बांग्लादेश की स्वतंत्रता और पाकिस्तान को हराया, पाकिस्तान के सहयोगी यूएसए को भी धोका दिया। बांग्लादेश के जन्म के साथ ही पाकिस्तान ने अपना आधा क्षेत्र खो दिया।
- सोवियत संघ के साथ दोस्ती का एक नया अध्याय शुरू किया।
- **शिमला समझौता**: 1971 के बांग्लादेश युद्ध के तुरंत बाद पाकिस्तान के साथ शांति का पुनर्निर्माण।
- कश्मीर मसले को सुलझाने में असफल रहा ।
- दक्षिण एशिया के रणनीतिक वातावरण में परिवर्तन- पाकिस्तान की हार ने भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय ताकत के रूप में स्थापित किया।
- अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों पर बल दिया।
- बांग्लादेश के साथ एक दीर्घकालिक शांति और मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए।
- श्रीलंका के साथ संबंध- कच्चातीवू का द्वीप श्रीलंका को सौंप दिया।
- श्रीलंका में कठिनाई में फंसे तमिल भाइयों की सहायता की।
- 29 जुलाई 1987 को कोलंबो में भारत-श्रीलंका शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए और भारतीय शांति रक्षा बल (IPKF) श्रीलंका भेजा गया।

श्रीलंका (1974 और 1976), इंडोनेशिया (1974) और बांग्लादेश (1974 बेरुबारी संघ के मुद्दे को हल करके) के साथ सीमा और समुद्री क्षेत्र समझौता;

- बेरुबारी संघ वाद को हल करके श्रीलंका (1974, 1976), इंडोनेशिया और बांग्लादेश (1974) के साथ सीमा और समुद्री क्षेत्र सामझौता-
- 1974 में मजबूत परमाणु रणनीति और परमाणु परीक्षण।
- हक के तहत पाकिस्तान के साथ संबंध: विभाजन के बाद से संबंध नाजुक रहे।
- पाकिस्तान ने 1974 में भारत के परमाणु परीक्षणों को डराने-धमकाने वाला कदम बताया।
- 1978, दोनों देशों ने राजनयिक संबंध बहाल करना चुना लेकिन पाकिस्तान को जल्द ही सैन्य तानाशाही के अधीन कर दिया गया
- चीन के साथ संबंध बढ़ाने के प्रयास किए गए।

भारत-सोवियत

- यूएसएसआर के साथ दोस्ती का एक नया अध्याय शुरू किया।
- चीन, पाकिस्तान और पश्चिम द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में भारत की सहायता की।

- दिल्ली घोषणा, 1986- अहिंसा के गांधीवादी दर्शन का समर्थन किया।
- परमाणु, शक्ति, अंतरिक्ष और उच्च तापमान भौतिकी पर सहयोग किया।
- ईरान से दोस्ती।

भारत-अमेरिका

- राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को फिर से उन्मुख किया गया।
- उच्च प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और सुपर कम्प्यूटर की खरीद के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- आदान-प्रदान बढ़ाकर और व्यापार को बढ़ावा देकर संबंधों को मजबूत करें।

भारत-अफ्रीका

- 1986 में हरारे में गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन में अफ्रीका (आक्रमण, उपनिवेशवाद और रंगभेद का विरोध करने के लिए कार्रवाई) कोष की स्थापना में सफल।
- SWAPO (दक्षिण पश्चिम अफ्रीका पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन) मान्यता के रूप में नामीबिया को विस्तारित सहायता।
- भारत के उत्तर पूर्व में चीनी-प्रशिक्षित और सशस्त्र विद्रोहियों पर लगाम लगाने के लिए एक कामकाजी संबंध विकसित करने के लिए राज्य के प्रमुख ने म्यांमार की यात्रा की ।
- आसियान (ASEAN) के साथ संबंध विकसित करने के प्रयास।
- कंबोडिया से वियतनाम की वापसी पर बातचीत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, देश की गुटनिरपेक्ष नीति का प्रतिनिधित्व किया।

4. सामरिक स्वायत्तता की खोज (1991-1998)

इस अवधि के दौरान भारत की विदेश नीति।

- आवश्यक समायोजनों ने भारत को एक प्रमुख शक्ति के रूप में मान्यता दी।
- हमारी विदेश नीति पर अलगाववादी विद्रोह और आर्थिक सुधारों जैसे कारकों चरों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए वैश्विक गठबंधनों का कुशल रखरखाव।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीति पर वैश्वीकरण का प्रभाव तेज हो गया था।
- प्रतिमान बदलाव = अरब देशों का विश्वास हासिल करते हुए इजरायल के साथ संबंध बढ़ाना।
- शीत युद्ध की समाप्ति के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ।

महाशक्तियों के संबंधों में बदलाव

- विश्व राजनीति की द्विध्रुवीय प्रकृति समाप्त - अमेरिका एकमात्र महाशक्ति प्रतीत होता था; और प्रत्येक राष्ट्र ने नई व्यवस्था के अनुकूल अपनी विदेश नीति के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया शुरू की।
- सोवियत संघ के साथ भारत के संबंध तनावपूर्ण हो गए। रूस अभी भी शीत युद्ध के बाद की चुनौतियों से जूझ रहा है। अमेरिका के साथ उसके संबंध सुधरे।
- जब सरकार ने बाजार अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने का विकल्प चुना, तो इसने अमेरिकी और अन्य विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया।
- यूएस-इंडिया कमर्शियल अलायंस (USICA) की स्थापना 1995 में हुई थी।
- अमेरिका ने भारत को "बिग इमर्जिंग मार्केट" के रूप में नामित किया।

भारत को उदारीकरण के युग में लाना

- नए वैश्विक संदर्भ के अनुकूल होने के लिए, भारत ने भारत की विदेश नीति को नया रूप देना शुरू किया।
- वैश्वीकरण के निरंतर दबाव के तहत भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार और उदारीकरण,
- अधिकांश उद्योगों का लाइसेंस रद्द कर दिया गया और रुपये का 23% अवमूल्यन किया गया।
- आयात शुल्क घटाए गए और आयात प्रतिबंध हटाए गए।
- एक बाजार-निर्धारित विनिमय दर तंत्र लागू किया गया था।
- आजादी के बाद पहली बार, FDI में नाटकीय रूप से विस्तार हुआ।

लुक ईस्ट नीति

- इस नीति के परिणामस्वरूप भारत ने दक्षिण-पूर्व एशिया पर ध्यान केंद्रित किया, जिसे शीत युद्ध के दौरान लंबे समय तक उपेक्षित किया गया था।

सुरक्षा में पहल

- भारत के विदेशी सुरक्षा कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए 1992 में महत्वाकांक्षी बैलिस्टिक मिसाइल प्रौद्योगिकी कार्यक्रम शुरू किया। ASLV और PSLV का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।
- 1994 में पृथ्वी मिसाइल का पहला सफल परीक्षण किया गया।
- बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम से अमेरिका चिढ़ गया, लेकिन आर्थिक चिंताओं के कारण, संबंध काफी नहीं बिगड़े।

पड़ोसी देशों के साथ संबंध

- अपने पड़ोसियों के साथ भारत के संबंधों में भी सुधार हुआ।
- भारतीय प्रधानमंत्री ने 1993 में चीन का दौरा किया, जिससे दो देशों के बीच कुछ तनाव कम हुए।
- दक्षिण एशियाई प्राथमिकता व्यापार समझौता (SAPTA), 1995 = भारत + सार्क देश।
- आर्थिक कूटनीति में लगे श्रीलंका ने अनेक सहयोगी उपक्रमों की घोषणा की।

गुजराल सिद्धांत

- 5 सिद्धांतों का संग्रह, जो भारत की विदेश नीति को उसके निकटतम पड़ोसियों के प्रति निर्देशित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण, सौहार्दपूर्ण संबंधों के महत्व को मान्यता दी गई।

- **सिद्धांत**
  1. भारत अपने पड़ोसियों से पारस्परिकता की माँग नहीं करता है, बल्कि सद्भाव और विश्वास के साथ जो कुछ भी कर सकता है उसे देता है और समायोजित करता है।
  2. दक्षिण एशिया के किसी भी देश को अपने क्षेत्र को दूसरे के विरुद्ध उपयोग करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।
  3. किसी भी देश को दूसरे देश के घरेलू मामलों में दखल नहीं देना चाहिए।
  4. प्रत्येक दक्षिण एशियाई देश की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान किया जाना चाहिए।
  5. उनकी सभी असहमतियों को शांतिपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता के जरिए सुलझाया जाना चाहिए।

5. शक्ति संतुलन (1998-2014)

इस अवधि के दौरान भारत की विदेश नीति

- लाहौर शिखर सम्मेलन और कारगिल युद्ध वाजपेयी के प्रधानमंत्रीकाल के दौरान हुआ था।

व्यापार गुटों के साथ संबंधों को मजबूत करना

- वाजपेयी ने वियतनाम और इंडोनेशिया का दौरा किया और अपनी पूर्व की ओर देखो नीति के हिस्से के रूप में आर्थिक और वाणिज्यिक सौदों पर बातचीत की।
- वाजपेयी सरकार ने आसियान के साथ भी मजबूत व्यापारिक संबंध बनाए, जिसका पहले भारत से कोई संबंध नहीं था।
- पहला भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन जून 2000 में लिस्बन में हुआ था।

भारत ने 1998 में परमाणु परीक्षण किए। एक पक्षीय प्रतिबद्धता

- अतिरिक्त परमाणु परीक्षणों पर अनौपचारिक रोक
- परमाणु हथियारों के "नो फर्स्ट यूज" (NFU) का संकल्प लें। भारत ने दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप पर संकट स्थिरता का एक उपाय प्रदान किया। साथ ही हथियारों की पूरी दौड़ को टाल दिया।
- भारत और अमेरिका ने अपनी अब तक की सबसे लंबी राजनयिक वार्ता की, जो 3 साल तक चली।
- "ब्रासीलिया घोषणा" के परिणामस्वरूप 2003 में IBSA संवाद मंच की स्थापना की गई।
- आगरा शिखर सम्मेलन, 2001- मुशर्रफ ने दोनों देशों के मध्य संबंधों को सामान्य करने के लिए भारत का दौरा किया।
- कश्मीर समस्या पर मुशर्रफ के अड़ियल रुख के कारण सम्मेलन एक अनुकूल प्रस्ताव देने में विफल रहा।

बांग्लादेश-भारत-म्यांमार त्रिपक्षीय समझौता, 2005
पाकिस्तान-अफगानिस्तान-चीन

- पाकिस्तान के प्रति उदार रवैया अपनाया गया।
- दोनों देशों के बीच संबंधों को बढ़ाने के लिए "दस-आयामी योजना" की सिफारिश की गई।
- भारत, अफगानिस्तान में शीर्ष क्षेत्रीय दाता बन गया।
- मनमोहन सिंह ने भारत के विदेशी संबंधों में सबसे महत्वपूर्ण 3 देश अमेरिका, चीन और पाकिस्तान के साथ बढ़े हुए जुड़ाव के वाजपेयी के एजेंडे से अलग नहीं होने का फैसला किया।

भारत-अमेरिका संबंधों की नई शुरुआत। भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु सहयोग, 2005

- वाशिंगटन की मदद से, दिल्ली को एनएसजी से स्पष्ट छूट मिली, जिससे इसे एक परमाणु राज्य के रूप में मान्यता मिली।
- रूस: रूस के साथ भारत के संबंध स्थिर रहे।
- चीन: भारत का दृष्टिकोण - "आपसी सम्मान और आपसी संवेदनशीलता का आधार"।
- पाकिस्तान- पाकिस्तान को भारत के साथ पटल पर लाने की कोशिश की गई।
- भारतीय प्रधानमंत्री ने फरवरी 1999 में पाकिस्तान की बस यात्रा की, लंबे समय से लंबित विवाद को सुलझाने के लिए बातचीत शुरू करने के लिए व्यापक रूप से सराहना की गई।
- नेपाल और श्रीलंका के साथ संबंध प्रगाढ़ हुए।

मनमोहन सिद्धांत

- तर्क दिया कि विश्व की शक्तियों और पड़ोसियों के साथ भारत के संबंध, इसकी विकास प्राथमिकताओं द्वारा परिभाषित हैं।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ गहन एकीकरण से भारत को लाभ होगा।
- भारत को एक वैश्विक आर्थिक और सुरक्षा माहौल स्थापित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सहयोग करना चाहिए जिससे सभी देशों को लाभ हो।
- क्षेत्रीय संस्थागत क्षमता और क्षेत्रीय जुड़ाव को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

6. ऊर्जावान कूटनीति (2014 - वर्तमान)

इस अवधि के दौरान भारत की विदेश नीति

- लंबी अवधि की विदेश नीति तैयार करने पर ध्यान।
- पड़ोसी देशों के मध्य संबंधों का विकास, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में सुधार, और आधुनिकीकरण को रक्षा मंत्रालय में सबसे आगे बढ़ावा दिया।
- भारत ने आमतौर पर "गुटनिरपेक्ष" विदेश नीति अपनाई।
- नई दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अधिक मुखर है, विशेषकर पाकिस्तान के साथ।

विदेश नीति के उद्देश्यों में शामिल हैं

- दक्षिण एशिया में शांति और शांति के रूप में पड़ोसियों के साथ बेहतर संबंध स्थापित करना ।
- भारत में स्थापित पैरा-कूटनीति की धारणा।
- कुछ प्रमुख वैश्विक शक्तियों के अपवाद के अलावा, जिनके साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी है, द्विपक्षीय व्यापार अधिकांश देशों के साथ संबंधों पर हावी रहेगा।

आवश्यक उद्देश्य

- विश्व पटल पर भारत का स्थान फिर से स्थापित करना।
- भारत की अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था में अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों का विश्वास पुनर्स्थापित करना।

विदेश नीति में परिवर्तन

- आर्थिक और तकनीकी विकास की केंद्रीयता
- "भारत का आर्थिक विकास लक्ष्य- " आजादी के बाद से देश का आदर्श वाक्य रहा है ।
- आर्थिक विकास के सभी तत्वों में "प्रौद्योगिकी" की भूमिका की स्वीकृति।
- भारतीय अर्थव्यवस्था की तकनीकी क्षमताओं की वैश्विक प्रथाओं या वैश्विक प्रौद्योगिकी सीमा से तुलना करना ।
- घरेलू और विदेश नीति एकीकरण- स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया/स्मार्ट सिटीज।
- राष्ट्रीय शक्ति पर जोर- आर्थिक शक्ति के आधार पर निर्मित, जिसे सैन्य-रणनीतिक बल द्वारा शीर्ष पर रखा जाना चाहिए, और आगे "सॉफ्ट पावर" द्वारा सबसे ऊपर होना चाहिए।
- सॉफ्ट पावर और वैश्विक सामाजिक-राजनीति पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है: राष्ट्रीयशक्ति के तीसरे आयाम के रूप में – वैश्विक सामाजिकराजनीतिक , तथा सॉफ्ट पावर पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है ।
- भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत एवं इतिहास तथा वैश्विक रूप से प्रवासी भारतीयों का सामान्य आधार पर प्रसार सम्मिलित है ।
- आत्मविश्वासी व्यावहारिकता: किसी भी देश के आर्थिक या सुरक्षा संबंधों की पूरी क्षमता को साकार करने के लिए आत्म-लगाए गए, ऐतिहासिक और मानसिक बाधाओं को दूर करना।
- संभावित प्रतिद्वंद्वियों के साथ भारत के आर्थिक संपर्कों को बिना एक को प्रतिबंधित या पूरी तरह से समानांतर रूप से अपनी सुरक्षा साझेदारी से स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ाया जा सकता है।

<u>नीतिगत पहल</u>

नेबरहुड फर्स्ट नीति

- भारत के निकटतम पड़ोसियों के साथ संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- सार्क नेताओं को भारतीय प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया गया।
- GSAT-9 और ISRO दक्षिण एशियाई देशों को कवरेज प्रदान करने के लिए सुविधा देता है ।
- **लुक ईस्ट नीति**- लुक ईस्ट की नीति से नए दृष्टिकोण के साथ फिर से तैयार किया गया।
- **लिंक वेस्ट पॉलिसी:** मध्य पूर्व के लिए एक्ट ईस्ट पॉलिसी के पूरक के रूप में ।
- **हिंद महासागर पहुंच:** भारत ने IOR में अपने समुद्री पड़ोसियों तक पहुँचना शुरू कर दिया।
- IOR पर विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में रणनीतिक प्रभुत्व का अनुमान।
- **इंडिया फर्स्ट नीति**- विभिन्न देशों के साथ बातचीत का तुलनात्मक लाभ-लागत अनुपात
- **फास्ट-ट्रैक डिप्लोमेसी**- 3 चेहरों पर ध्यान, सक्रिय, सशक्त और संवेदनशील।
- **सार्क का विकल्प**- पाकिस्तान से बचने के लिए बिम्सटेक की ओर रुख करना ।
- रायसी**ना डायलॉग**- दुनिया के साथ एशियाई एकीकरण के लिए भविष्य के अवसरों की खोज।

इस अवधि के दौरान विदेश नीति का आकलन

प्राप्त परिणाम

- विदेशी निवेशकों का भरोसा बढ़ा (भारत में अधिक पूँजी प्रवाह)
- बेहतर भारत-अमेरिका संबंध: कई व्यापारों को प्रतिबंधित करना, रक्षा सौदे और संयुक्त सैन्य अभ्यास।
- रक्षा सहयोग में वृद्धि - 36 राफेल लड़ाकू विमानों की बिक्री को लेकर गतिरोध तोड़ा।
- सॉफ्ट पावर का उपयोग- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और विश्व योग, सॉफ्ट विदेश नीति की सफलता।
- पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों के खिलाफ भारत की "सर्जिकल स्ट्राइक" को घरेलू प्रशंसा मिली।

सीमाएँ

- मोदी की चीन के प्रति नीति तनाव और अविश्वास को दूर करने में विफल रही।
- भारत का स्वआरोपित अलगाव- NAM और SAARC से।
- पड़ोसियों के साथ संबंध कमजोर करना- भारत की विदेश नीति के लिए अधिक चिंताजनक स्थिति।
- श्रीलंका की तुलना में चीन की चेक बुक कूटनीति,
- NRC मुद्दे पर बांग्लादेश के साथ संबंधों में तनाव और
- नया मानचित्र जारी होने के कारण नेपाल के साथ हालिया सीमा विवाद।

3 CHAPTER भारत और उसके पड़ोसी देश

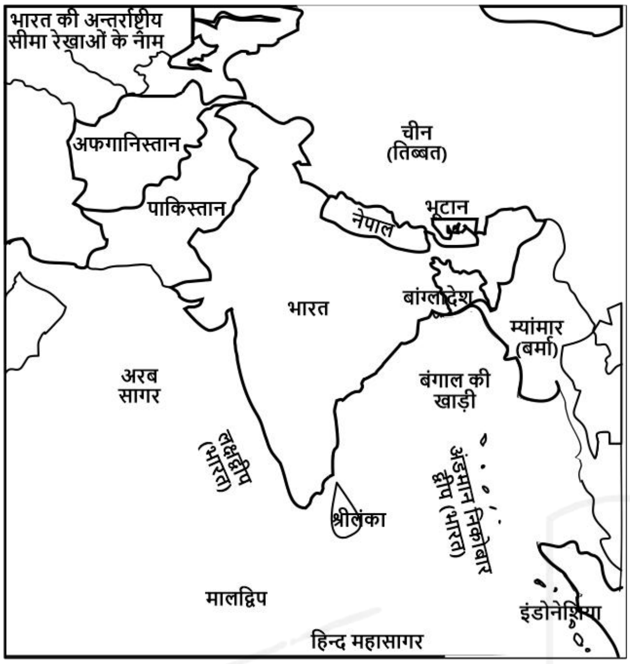

- भारत के पड़ोसी देश - पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार
    - समुद्री पड़ोसी देश - श्रीलंका और मालदीव
- भारत की नीति दृष्टि: व्यापार, संपर्क और लोगों से लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देने पर जोर देने के साथ दक्षिण एशियाई शांति और सहयोग को बढ़ावा देना।

नेबरहुड फर्स्ट नीति

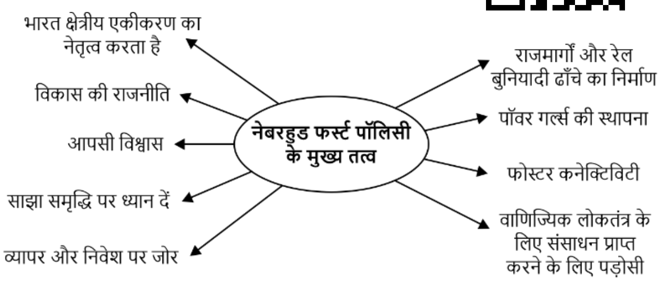

नेबरहुड फर्स्ट नीति के पीछे की विचारधारा

- भारत को अपने पड़ोस की घटनाओं पर प्रतिक्रिया करने के बजाय उन घटनाओं पर नियंत्रण करना चाहिए।
    - अंतर्राष्ट्रीय मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की भारत की इच्छा के अनुरूप।
- पारस्परिक रूप से लाभकारी क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग के माध्यम से अधिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए ।
    - विदेश नीति के लिए एक सुपरिभाषित प्रतिमान का अनुसरण करें ।
- भारत की आर्थिक कूटनीतिक रणनीति का मुख्य सार पड़ोसियों को पहले रखने में है।
- **मुख्य विशेषताएं**
    - **पड़ोसियों को तत्काल प्राथमिकता-** विकास योजना को प्राप्त करने के लिए दक्षिण एशिया में शांति और शांति सुनिश्चित करना।
    - **क्षेत्रीय कूटनीति:** पड़ोसी देशों के साथ जुड़ने और बातचीत के माध्यम से राजनीतिक संबंध बनाने पर जोर।
    - **द्विपक्षीय मुद्दों को हल करना-** द्विपक्षीय चिंताओं के लिए पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान खोजना। उदाहरण- भारत-बांग्लादेश ने भूमि सीमा समझौते LBA) Land Boundary Agreement(पर हस्ताक्षर किए।
    - **कनेक्टिविटी-** भारत ने राष्ट्रीय सीमाओं के पार संसाधनों, ऊर्जा, माल, श्रम और सूचनाओं की मुक्त आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए SAARC के सदस्यों के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।
    - **आर्थिक सहयोग:** व्यापार संबंधों को मजबूत करने के लिए। SAARC क्षेत्रीय विकास के लिए एक तंत्र के रूप में भारत की भागीदारी और निवेश से लाभान्वित हुआ। ऊर्जा विकास के लिए BBIN (Bangladesh Bhutan India Nepal) समूह, जिसमें मोटर वाहन, जलशक्ति प्रबंधन और इंटर-ग्रिड कनेक्टिविटी शामिल हैं।
    - **तकनीकी सहयोग:** पूरे दक्षिण एशिया के लोगों के साथ टेलीमेडिसिन और ई-लर्निंग जैसे प्रौद्योगिकी के लाभों को साझा करने के लिए सार्क उपग्रह लॉन्च किया गया।
    - **आपदा प्रबंधन:** भारत सभी दक्षिण एशियाई नागरिकों को आपदा प्रतिक्रिया, संसाधन प्रबंधन, मौसम पूर्वानुमान और विशेषज्ञता प्रदान करता है। नेपाल में 2016 में आए भूकंप के बाद भारत ने असाधारण सहायता प्रदान की।
    - **रक्षा सहयोग:** भारत रक्षा संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से सूर्य किरण)नेपाल(और संप्रति,)बांग्लादेश(जैसे अभ्यासों के माध्यम से क्षेत्रीय सुरक्षा बढ़ा रहा है।
    - **पड़ोसियों को सहायता:** दान या 'दान' के मूल्य के साथ सद्भावना संकेत ।
        - नेपाल, श्रीलंका और भूटान जैसे पड़ोसियों को तकनीकी सहायता।
        - अनियोजित अनुदान के तहत मानव संसाधन संबंधी प्रशिक्षण।
        - विकास कूटनीति के एक उपकरण के रूप में ITEC (Indian Technical and economic cooperation) छात्रवृत्ति और क्रेडिट लाइन

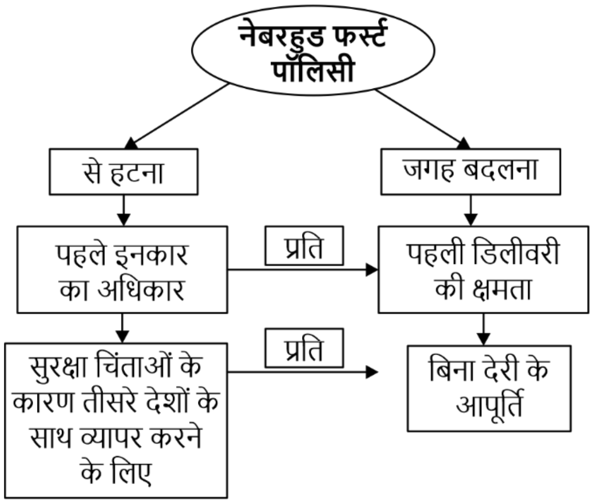

नेबरहुड फर्स्ट नीति के समक्ष चुनौतियां

- **नेपाल** का आरोप लगाता है कि-
    - भारत ने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया।
    - भारत ने सार्वजनिक रूप से नेपाल के संविधान के प्रति अपना असंतोष व्यक्त किया है ।
    - भारत ने नाकेबंदी का सहारा लेकर, नेपाल को UN से शिकायत करने के लिए विवश किया ।
    - भारत ने ओली सरकार को गिराने के लिए रॉ का सहारा लिया।
- **श्रीलंका**- आरोप लगाता है कि श्रीलंका के तत्कालीन रॉ स्टेशन प्रमुख के एलंगो, राजपक्षे सरकार को गिराने का इरादा रखते थे।
- **मालदीव**- आरोप है कि नशीद को गिरफ्तार किए जाने पर भारत अति उत्साही और अनुचित व्यवहार प्रदर्शित करता रहा है।
- **पाकिस्तान**- सबसे बड़ी कूटनीतिक और सुरक्षा दुविधा। भारत की कठिनाई एक ऐसे राज्य के साथ संबंधों का प्रबंधन करना है जो खुले तौर पर राज्य की नीति के एक उपकरण के रूप में आतंक का उपयोग करता है और जिसके पास कई शक्ति केंद्र हैं।
- **अफगानिस्तान**- तालिबान द्वारा हालिया अधिग्रहण अफगानिस्तान में भारत द्वारा किए गए सभी विकासात्मक प्रयासों को खतरे में डालता है।
- **चीन**- भारतीय उपमहाद्वीप में अपने पैर पसार रहा है। ग्वादर बंदरगाह का निर्माण, स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स, OBOR पहल ने संबंधों में संदेह को जन्म दिया है। CPEC, POK से होकर गुजरता है।
- **बांग्लादेश**- तीस्ता नदी के पानी जैसे अनसुलझे मुद्दे, अवैध प्रवास का मुद्दा आदि ।

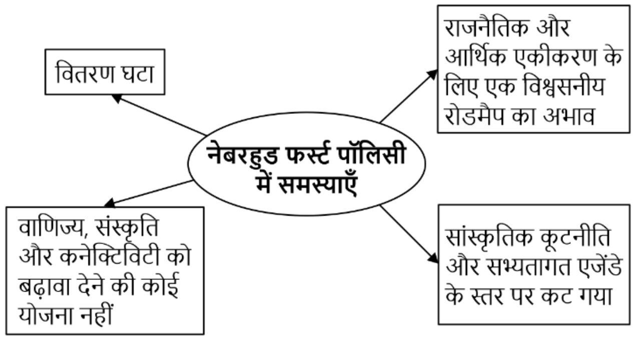

आगे की राह

- कूटनीति- भारत को अहंकार दिखाने की बजाय धैर्यवान कूटनीति का सहारा लेना चाहिए।
- कनेक्टिविटी- सीमा पार परिवहन और संचार संबंध स्थापित करने में अग्रणी होना चाहिए।
- क्षमता विकास- अधिक विदेशी राजनयिकों और नौकरशाहों की भर्ती करके।
- सॉफ्ट पावर- भारत की साझा संस्कृति क्षेत्र में अपनी जड़ें गहरी करने का अवसर प्रदान करती है।
- आर्थिक विकास- अपने बाजारों का विस्तार करने और अपने बुनियादी ढांचे में सुधार करने के लिए पड़ोसियों के साथ सहयोग करें। सतत और समावेशी विकास पर जोर दिया जाना चाहिए।

भारत-अफगानिस्तान

- आधिकारिक तौर पर अफगानिस्तान का इस्लामी अमीरात। राजधानी काबुल ।
- मध्य और दक्षिण एशिया के चौराहे पर स्थित स्थलबद्ध देश
- पड़ोसी - पूर्व और दक्षिण में पाकिस्तान (पाकिस्तान-नियंत्रित गिलगित-बाल्टिस्तान के साथ एक छोटी सीमा जोकि, भारत द्वारा दावा किया गया क्षेत्र है), पश्चिम में ईरान, उत्तर में तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान, और उत्तर-पूर्व में ताजिकिस्तान और चीन।
- क्षेत्रफल 652,864 वर्ग किमी. मुख्य रूप से पहाड़ी, उत्तर और दक्षिण-पश्चिम में मैदानी इलाकों के साथ हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला से अलग।

ऐतिहासिक संबंध

- प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के बाद से संबंध मौजूद थे।
  - सिकंदर के उत्तराधिकारियों में से एक, सेल्यूकस निकेटर ने गठबंधन संधि के हिस्से के रूप में 305 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य को सौंपने से पहले अफगानिस्तान के अधिकांश हिस्से को नियंत्रित किया था।
- मध्यकालीन
  - 10वीं मध्य 18वीं शताब्दी- भारत के उत्तरी क्षेत्रों में कई आक्रमणकारियों जैसे गजनवी, घुरिद, खिलजी, सूरी, मुगल और दुर्रानी द्वारा आक्रमण।
  - मुगल काल अपने क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता के कारण अफगानी भारत आए।
- आधुनिक:
  - खान अब्दुल गफ्फार खान - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता और कांग्रेस के सक्रिय समर्थक।
- स्वतंत्रता के बाद भारत - 1980 के दशक में सोवियत समर्थित लोकतांत्रिक गणराज्य अफगानिस्तान को मान्यता देने वाला एकमात्र दक्षिण एशियाई देश है हालांकि 1990 के दशक के अफगान गृहयुद्ध और तालिबान सरकार के दौरान संबंध कम हो गए।
  - तालिबान की सहायता से तख्तापलट किया ।
- सामरिक साझेदारी समझौता: अक्टूबर 2011 में हस्ताक्षरित।
  - उद्देश्य अफगानिस्तान के बुनियादी ढांचे और संस्थानों का पुनर्निर्माण करना।
  - स्वदेशी अफगान क्षमता के पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा और तकनीकी सहायता प्रदान करना।
  - अफगानिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों में निवेश को प्रोत्साहित करना।
  - भारतीय बाजार में अफगानिस्तान के निर्यात को शुल्क मुक्त पहुंच प्रदान करना।
- भारत - अफगानिस्तान को 5वां सबसे बड़ा दाता और सबसे बड़ा क्षेत्रीय दाता।
- भारत ने सुरक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण से क्षेत्रीय विश्वास निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया।

अफगानिस्तान और तालिबान

- अफगानिस्तान से सोवियत सैनिकों की वापसी के बाद 1990 के दशक की शुरुआत में तालिबान का उदय हुआ।
- तालिबान ने 1996 से 2001 तक अफगानिस्तान पर शासन किया लेकिन घोर कुशासन के कारण अमेरिकी आक्रमण हुआ।
- जब से अमेरिका और उसके सहयोगियों ने ओसामा बिन लादेन को मारने के आधार पर अफगानिस्तान पर हमला किया, तालिबान नियंत्रण प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है।
- हाल ही में, US-तालिबान शांति समझौता, विदेशी बलों की वापसी, कैदियों की रिहाई और तालिबान की मान्यता आदि।
- अमेरिका के हटने के बाद तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया।

उत्तरी गठबंधन

- अफगान नॉर्दर्न एलायंस/यूनाइटेड इस्लामिक फ्रंट।
- तालिबान के काबुल पर कब्जा करने के बाद 1996 के अंत में एक संयुक्त सैन्य मोर्चे का गठन हुआ।
  - जिसमें ईरान, रूस, तुर्की, भारत, अमेरिका आदि से समर्थन प्राप्त हुआ ।
- अफगानिस्तान में अमेरिकी प्रवेश। तालिबान के खिलाफ 2 महीने के युद्ध में जमीन पर उत्तरी गठबंधन के सैनिकों को समर्थन प्रदान किया, जिसे उन्होंने दिसंबर 2001 में जीता था।
- तालिबान को देश के नियंत्रण से बाहर किया गया। सदस्य और दलों के करजई प्रशासन की नई स्थापना में शामिल होने पर बाद में उत्तरी गठबंधन भंग हो गया ।

सहयोग के क्षेत्र

<u>सांस्कृतिक संबंध</u>

- अफगानिस्तान 2000 से अधिक वर्षों से भारत के साथ फारस, मध्य एशिया की सभ्यताओं को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण व्यापार और शिल्प केंद्र रहा है ।
- छात्रवृत्ति कार्यक्रम काबुल में हबीबिया स्कूल का पुनर्निर्माण और नवीनीकरण।
  - भारत अफगानिस्तान को सालाना 500 ITEC स्लॉट प्रदान करता है।
  - अफगान नागरिकों को प्रति वर्ष 1000 छात्रवृत्ति की विशेष छात्रवृत्ति योजना।

<u>राजनीतिक संबंध</u>

- 2011: भारत-अफगान संबंधों को मजबूत करने के लिए रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- काबुल में नया चांसरी परिसर: भारत का नया दूतावास।

आर्थिक संबंध

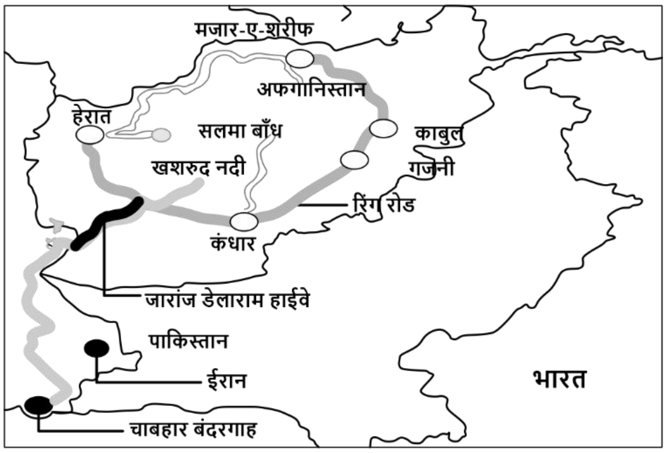

- **आधारभूत संरचना:** भारतीय सहायता से निर्मित
  - हरिरुद नदी पर हेरात क्षेत्र में अफगान-भारत मैत्री बांध (सलमा बांध)
  - अफगान संसद
  - जरांज-डेलाराम राजमार्ग (218 किलोमीटर लंबा, Border Road organization द्वारा निर्मित) अफगान-ईरान सीमा के साथ
  - शक्ति का आधारभूत ढाँचा: काबुल के उत्तर में पुल-ए-खुमरी से 220kV DC ट्रांसमिशन लाइन।
- **कनेक्टिविटी (संयोजकता)**
  - डायरेक्ट एयर फ्रेट कॉरिडोर।
  - चाबहार बंदरगाह सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत, ईरान अफगानिस्तान और मध्य एशियाई क्षेत्र के साथ समुद्री-भूमि संपर्क बढ़ाने के लिए।
  - TAPI 2016 में लॉन्च किया गया। हर साल 33 बिलियन क्यूबिक मीटर प्राकृतिक गैस ले जाने का लक्ष्य। पाइपलाइन तुर्कमेनिस्तान से अफगानिस्तान और पाकिस्तान के रास्ते भारत तक जाती है।
  - TAPI – तुर्कमेनिस्तान ,अफगानिस्तान ,पाकिस्तान , इंडिया
  - – INSTC इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कोरिडोर
  - INSTC ईरान के माध्यम से रूस, यूरोप और यूरेशिया को भारत से जोड़ने के लिए व्यापार गलियारा परियोजना।
    - मध्य एशिया से कनेक्टिविटी के लिए INSTC के साथ भारत समर्थित चाबहार पोर्ट

वखान कॉरिडोर

- अफगानिस्तान का गलियारा और चीन का झिंजियांग प्रांत जो कि भारत के लिए भू-रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

वखान कारीडोर का सबसे संकरा हिस्सा 12.871 मी. हैं 1947 के बाद भारत, पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को मान्यता नहीं देता है, वखान से सीमाएँ लगती हैं इस प्रकार भारत के अनुसार वखान में अफगानिस्तान के साथ सीमा लगती हैं

- वखान कॉरिडोर के सिरे पर स्थित क्षेत्र CPEC के लिए एक प्रमुख चौराहे के रूप में विकसित हो रहा है।
- भारत की चिंता
  - CPEC के माध्यम से चीन की मौजूदगी से भारत की क्षेत्रीय अखंडता प्रभावित होगी।
  - जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद बढ़ेगा।
  - चीन गलियारे को 'शक्ति या संघर्ष के गलियारे' के जिज्ञासु मामले में बदलने की योजना बना रहा है।
- भारत की 2 विषयों के साथ प्रस्तावित भव्य रणनीति-
  - 'जम्मू-कश्मीर का डी बाल्केनाइजेशन'
  - 'एशिया का पुन: एशियाईकरण'।

रक्षा और सुरक्षा संबंध

- क्षमता निर्माण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में अफगान सैनिकों का प्रशिक्षण।
- अफगान सुरक्षा बलों के शहीदों के बच्चों के लिए 500 छात्रवृत्ति।
- रक्षा उपकरणों की आपूर्ति अफगान वायु सेना को 4 एमआई-25 अटैक हेलीकॉप्टर का उपहार।
- पुलिस:
  - पुलिस प्रशिक्षण और विकास पर तकनीकी सहयोग पर समझौता ज्ञापन भारत द्वारा अफगान सैनिकों की अपनी क्षमता निर्माण का विस्तार करने की मांग करता है।
  - सामरिक भागीदारी परिषद में 116 "नई विकास परियोजनाओं" के लिए एक भारतीय प्रतिबद्धता और संवर्धित सुरक्षा सहयोग शामिल है

भारत के प्रयासों में चुनौतियां

- **सुरक्षा चिंतायें :**
  - अफगानिस्तान से नाटो के नेतृत्व वाले सुरक्षा सहायता बल के जवानों की वापसी अफगानिस्तान को अस्थिरता और आतंकवाद के लिए पुन: स्प्रिंगबोर्ड में बदल रहा है
  - तालिबान सरकार का अफगानिस्तान में गठन।
- तालिबान को पाकिस्तान का समर्थन- भारत के विकास प्रयासों को अस्थिर करना।